विचार बिन्दु

चेहरा मस्तिष्क का प्रतिबिम्ब है और आँखें बिना कहे दिल के राज़ खोल देती हैं। –सैंट जेरोमे

क्या कॉप-27 यानी संयुक्त राष्ट्र का जलवायु शिखर सम्मेलन विश्व के लिये आशा बनेगा?

मिस्र के शर्म अल-शेख शहर में 6 नवम्बर 2022 से प्रारम्भ होकर 18 नवम्बर, 2022 तक संयुक्त राष्ट्र का जलवायु शिखर सम्मेलन कॉप-27 चलेगा।

इस वर्ष जिस प्रकार से घटनाक्रम रहा, उसने यह साबित कर दिया कि 'जलवायु परिवर्तन' हो रहा है, यह सत्य है, जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। बाढ़ ने पाकिस्तान और नाइजीरिया के बड़े भाग को तबाह कर दिया। अफ्रीका और पश्चिमी अमेरिका में सूखा पहले ही था वह और खराब हो गया। चक्रवातों ने केरिवियन इलाके का सत्यानाश ही कर दिया। उत्तराखण्ड (हिमालय के क्षेत्र) में बादल फटने की घटनाओं ने लोगों ने देखा वैसा सर्वनाश पहले कभी नहीं देखा गया। देश में बाढ़ों ने हाहाकार मचा दिया। कई महाद्वीपों में हीटवेव ने जनजीवन खत्म कर दिया। इंग्लैण्ड और यूरोप में लोग गर्मी से तड़प उठे। अमेरिका में गर्मी से जंगलों में आग लग गई, बारिश की जगह बाढ़ ने ले लिया। लोग दाने-दाने को मोहताज रहे। 4 करोड़ लोग भुखमरी की हालत में आ गये। समुद्र की सतह ऊंची हो रही है। पहाड़ पिघल रहे हैं। जंगलों की बर्बादी हो रही है। हजारों प्रजातियां नष्ट हो गई हैं।

ऐसी स्थिति देखी गई है कि शायद प्रलय ही आने वाला है, जिसका वर्णन महाकवि जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' में इस प्रकार किया है:-

''हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह,
क पुरूष, भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह।
ऊपर हिम था, नीचे जल, एक तरल था एक सघन,
एक तत्त्व की ही प्रधानता-कहो उसे जड़ या चेतन।''

उपरोक्त घटनाओं के कारण विश्व के लीडर्स कॉप-27 में भाग लेने आ रहे हैं, इसमें अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाईडन आ रहे हैं ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक व अन्य आ चुके हैं। भारत के पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव भी शामिल हो चुके हैं। दुनियां भर के नेता जलवायु परिवर्तन और उसके समाधान के हेतु चर्चा करेंगे। ऐसा समझा जा रहा है कि बैठक में फोकस क्लाईमेट फाइनेन्स पर होगा। बैठक से पहले ही यूएन महासचिव एंटोनियो गुटरेस ने यह घोषणा कर दी कि बैठक का मुख्य मुद्दा होगा, गरीबी व अमीरी के बीच का अन्तर कम करना। उनका कहना है कि विकसित देशों को क्लाईमेट चेंज पर डेवलपिंग कन्ट्रीज के साथ ऐतिहासिक समझौता करना चाहिए अन्यथा दुनियाँ की बर्बादी होगी। संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने कहा, जलवायु परिवर्तन से युद्ध की अपेक्षा अधिक लोग प्रभावित हैं और साथ ही आपदाओं की पूर्व चेतावनी प्रणाली के लिये 25 हजार करोड यानी 3.1 बिलियन डॉलर के प्रोजेक्ट की घोषणा की।

विकसित देश प्रत्येक वर्ष 100 बिलियन डॉलर का फण्ड गरीब देशों को देंगे। भारत के प्रतिनिधि भूपेन्द्र यादव, पर्यावरण मंत्री ने भी स्पष्ट किया कि उनका प्रयत्न होगा कि विकसित देश, विकासशील देशों को फाइनेन्स व टेक्नोलोजी का ट्रान्सफर करे; किन्तु यह सम्भव नहीं दिखाई देता।

कॉप-27 में यह चर्चा होगी कि विकसित देश यदि उत्सर्जन में कमी नहीं करेंगे तो भंयकर मौसमी आपदाओं से बचना कठिन होगा। कॉप-27 के एजेण्डा में यह भी विषय है कि अमीर देश गरीब देशों का मुआवजा दें। विकसित व पिछडे.देशों को साथ साथ आना होगा।

कॉप-27 में लगभग 190 देश भाग लेंगे। संयुक्त राष्ट्र के जलवायु परिवर्तन कार्यकारी सचिव साइमन स्टील ने इस अवसर पर कहा कि वे राष्ट्रों को ग्रीन हाउस उत्सर्जन को 45 प्रतिशत कम करने के लक्ष्य से पीछे हटने का विरोध करेंगे जिससे 19वीं सदी के अंत के स्तर से 1.5 डिग्री से ज्यादा बढ़ने न पाये। यह कयास किया जा रहा है कि कहीं चीन-अमेरिका के तनाव के फलस्वरूप शिखर सम्मेलन असफल नहीं हो जावे।

माराकस (मोरक्को) में कॉप-22 की भूमिका ऐतिहासिक है, क्योंकि इस शिखर सम्मेलन में क्योटो प्रोटोकॉल का स्थान एक एग्रीमेन्ट के द्वारा लेने का संकल्प 146 देशों ने अपनी अपनी घोषणा कर कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने का लिया है। यही 5 नवम्बर 2016 का पेरिस एग्रीमेन्ट है। एग्रीमेन्ट के साथी देश इसको गम्भीरता से नहीं ले रहे हैं। जबकि सतत् समावेशी और समान आर्थिक विकास, सतत विकास और गरीबी और भूखमरी के उन्मूलन के लिये राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सुशासन और न्याय संगत व्यवस्था आवश्यक है।

इस वर्ष जिस प्रकार से घटनाक्रम रहा, उसने यह साबित कर दिया कि 'जलवायु परिवर्तन' हो रहा है, यह सत्य है, जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। बाढ़ ने पाकिस्तान और नाइजीरिया के बड़े भाग को तबाह कर दिया। अफ्रीका और पश्चिमी अमेरिका में सूखा पहले ही था वह और खराब हो गया। चक्रवातों ने केरिवियन इलाके का सत्यानाश ही कर दिया।

यूएनओ के भवन की दीवारों पर लिखा है कि-'याद रहे गरीबी जहाँ भी है वह अमीरी के लिये एक चुनौती है'। यही कारण है कि कॉप-27 में यह एजेन्डा रखा गया है कि इस शिखर सम्मेलन में 'क्लाईमेट कम्पन सेशन' एजेन्डा पर बहस हो। यह एक मान्य सिद्धान्त है कि जो व्यक्ति अन्य व्यक्ति को अपने कार्यों से नुकसान पहुंचाता है, उसका कर्त्तव्य है दूसरे की क्षतिपूर्ति करे। यह भी मान्य कथन है कि जलवायु परिवर्तन (क्लाइमेट चेन्ज) के दोषी विकसित देश हैं और जलावयु परिवर्तन के कारण उन देशों के कर्मों की सजा गरीब देश उठा रहे हैं। अत: गरीब देश मुआवजे की प्राप्ति के अधिकारी हैं और अमीर देश इस मुआवजे की अदायगी के लिये उत्तरदायी हैं किन्तु कॉप-27 में ये अमीर देश इस पर चर्चा करने को ही तैयार नहीं हैं।

गत 10 वर्षों से अमीर देश नुकसान व क्षति (लॉस एण्ड डेमेज) के प्रश्न पर शिखर सम्मेलन में चर्चा तक करने से कतरा रहे थे; किन्तु कॉप-27 के प्रारम्भ ही में अमीर देशों (विकसित देशों) ने लॉस एण्ड डेमेज के प्रश्न पर चर्चा के एजेण्डा को सहमति दे दी किन्तु इस बात की गारन्टी नहीं दी कि मुआवजा दिया जावेगा अथवा उत्तरदायित्व को स्वीकारा जावेगा। कॉप-27 के अध्यक्ष समेह शौकरी ने कहा, ''इस एजेन्डे को शामिल करना जलवायु प्रेरित आपदाओं के पीडितों के लिये एक जुटता और सहानुभूति की भावना को दर्शाता है।'' उन्होंने कहा कि इसके लिये कार्यकर्त्ता और नागरिक समाज संगठनों के आभारी हैं, जिन्होंने लगातार नुकसान और क्षति के लिये धन पर चर्चा करने के लिये समय की माँग की। अमीर देशों ने अभी तक 100 अरब डालर प्रतिवर्ष देने का अपना वायदा भी पूरा नहीं किया है तथा अधिकांश क्लाइमेट फन्डिंग कर्ज पर आधारित है।

कॉप-27 ऐसे समय हो रही है जब चीन-अमेरिका के बीच तनाव चरम पर है। 120 से अधिक विश्व नेता शिखर सम्मेलन में शामिल हुये हैं, यों सबकी निगाहें चीन के राष्ट्रपति शी-जिनपिंग पर होगी, नतीजा क्या होगा यह भी संदेह के घेरे में है। अत: कॉप-27 की सफलता पर संदेह करना उचित होगा। आशा की किरण दिखाई नहीं देती।

इस प्रकार ऐसा प्रतीत हो रहा है कि शिखर सम्मेलन का मुख्य एजेन्डा नुकसान और क्षति पर होगा तथा उन देशों के लोगों ने जिन्हें बाढ़, तूफान आदि के कारण नुकसान हुआ उनकी क्षतिपूर्ति करनी चाहिये। यह भी एजेन्डा में होना चाहिये, फाइनेन्स की व्यवस्था कैसे करनी होगी? भारत के प्रतिनिधि पर्यावरण मंत्री श्री यादव ने स्पष्ट कहा कि भारत और उसके देश के नागरिक पूरा प्रयत्न करेंगे कि पर्यावरण को जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव से 2022 से 2027 तक देश को बचा सकें। उनकी धीमी आवाज में सुर मिलाने वाले नगण्य हैं।

यह शिखर सम्मेलन 16 नवम्बर 2022 तक चलेगा, गरीब व विकासशील देशों के प्रतिनिधि व एनजीओ इसमें भाग लेंगे, किन्तु न तो पेरिस एग्रीमेन्ट की ही पालना देश कर रहे हैं और न नुकसान व क्षतिपूर्ति के हेतु फाइनेन्स की वांछित व्यवस्था ही है। भारत कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने का प्रयत्न कर रहा है। सभी देश यह समझ चुके हैं कि तापमान जो 1.5 डिग्री से0 आगे बढ़ रहा है उसे 2 डिग्री से. से अधिक नहीं बढ़ने दिया जावे यों प्रयास यही हो कि वह 1.5 डिग्री से. पर स्थिर रहे अथवा 2 डिग्री से. से आगे नहीं बढ़े, अन्यथा प्रलय संभव है।

जलवाय परिवर्तन या यों मानें कार्बन उत्सर्जन के कारण प्रकृति मानव के विरूद्ध हो रही है, इस प्रकार यह प्रकरण मानव के जीने के अधिकार से संबंध रहता है। संविधान ने अनुच्छेद 21 में जीने के अधिकार को मूल अधिकार माना है और अन्तर्राष्ट्रीय संधियों में भी इसे मानव अधिकार माना गया है। जब मानव अधिकार को कोई नुकसान पहुंचाता है तो वह कोर्ट में क्षतिपूर्ति का दावा कर सकता है। अत: यदि कोई देश अन्य देश के नागरिकों को नुकसान पहुंचाता है तो वह इन्टरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस में कार्यवाही कर सकता है।

कॉप-27 शिखर सम्मेलन में उपरोक्त विषयों पर चर्चा होनी चाहिये अथवा कॉप-28 का एजेण्डा तय किया जावे।

कॉप-27 में 192 देशों के सदस्य देश तथा 45000 रजिस्टर्ड प्रतिनिधि तथा भारत से कई एनजीओ भाग ले रहे हैं, इनमें मुख्य है 'सिकोयडिकॉन, पैरवी, मौसम आदि'।

सबको सन्मति दे भगवान!

–अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

स्वतंत्र भारत में प्रजातंत्र एवं गणतंत्र की मजबूत नींव के निर्माण कर्ता शिल्पकार नेहरू

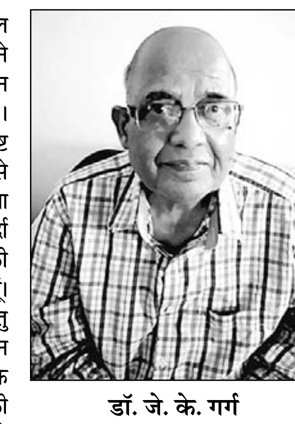

डॉ. जे. के. गर्ग

आधुनिक भारत के शिल्पकार नेहरूजी निर्विवाद रूप से हमारे स्वतंत्रता संघर्ष के महानतम प्रमुख नेताओं में अग्रणी थे और वे ही वो स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्हें नौ बार जेल में डाला गया और उन्होंने 3359 दिन जेल में बिताए। उन नौ वर्षों में उन्होंने कई किताबें लिखी, जिन्हें आज तक करोडों लोगों ने पढ़ा है। सच तो यह है कि आजाद भारत को उस वक्त जब भारत मे मामूली सुई तक नहीं बनाई जाती थी हर वस्तु का निर्यात होता था।

आज विरोधी लोग जवाहरलाल पर भारत पर परिवार वाद वंशवाद थोपने का आरोप लगाते हैं वे भूल जाते हैं कि नेहरूजी ने अपने जीवन काल में अपनी इकलौती बेटी इंदिरा को ना तो कभी मंत्री बनाया और ना ही ऍमपी। उस वक्त देश के करोड़ों युवा उनके जैसे वस्त्र पहनने लगे।

पीयूष बबेले की किताब ''नेहरू मिथक और सत्य'' के कुछ अंश इतिहासकार रामचंद्र गुहा ने अपनी किताब मोडर्न मेकर्स आफ इंडिया में लिखा है नेहरू जहाँ धर्म विरक्त थे, वहीं गांधी अपने विश्वासों के अनुरूप ईश्वर पर आस्था रखते थे। नेहरू भारत की पारंपरिक गरीबी से मुक्ति पाने के लिए औद्योगीकरण को ही एक मात्र विकल्प मानते थे, जबकि गांधी ग्रामीण अर्थ व्यवस्था के पक्षधर थे।

इन असहमतियों के साथ दोनों के बीच बुनियादी सहमतियां भी थीं, दोनों व्यापक अर्थ में सच्चे देशभक्त थे, जिन्होंने किसी जाति, भाषा, क्षेत्र, धर्म या कि किसी भी तरह अधिनायकवादी सरकार के साथ होने के बजाय अपने को पूरे देश के साथ एकाकार कर लिया था। दोनों हिंसा और आधिनायकवाद को नापसंद करते थे। जन जन के नायक नेहरू जी ने भारत मे अनेकों शक्तिशाली संस्थाओं की स्थापना कि जिससे देश के अन्दर प्रजातांत्रिक व्यवस्था मजबूत और स्थिर हो सके, इन संस्थाओं में लोकसभा, विधानसभा, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष न्यायालय और गतिशील कार्यपालिका आदि। नेहरूजी ने पूंजीवाद और कट्टर साम्यवाद के स्थान पर मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया। अपनी समाजवादी अवधारणा को स्पष्ट करते हुए नेहरू लिखते हैं–मैं समाज से व्यक्ति संपदा और मुनाफे की भावना खत्म करना चाहता हूं। मैं प्रतिस्पर्द्धा की जगह समाज और सहयोग की भावना स्थापित करने का समर्थक हूं। मैं व्यक्तिगत मुनाफे के लिए नहीं किन्तु जनता के उपयोग के लिए उत्पादन चाहता हूं। मैं यह बात विश्वासपूर्वक कहता हूं कि दुनिया और भारत की समस्याओं का अंत समाजवाद से ही हो सकता है।

नेहरूजी ने उस समय बिजली का उत्पादन पूरी तरह से सार्वजनिक क्षेत्र में रखा। इसी तरह इस्पात,बिजली के भारी उपकरणों के कारखाने, रक्षा उद्योग, एल्यूमिनियम एवं परमाणु ऊर्जा भी सार्वजनिक क्षेत्र में रखे गए। देश में तेल की खोज की गई और पेट्रोलियम रिफाईनरी व एलपीजीबाटलिंग का काम भी केवल सार्वजनिक क्षेत्र में रखे गये। नेहरूजी ने उच्च तकनीकी शिक्षा के लिये आईआईटी स्थापित किये। इसी तरह प्रबंधन के गुर सिखाने के लिए आईआईएम खोले गए। इन उच्च कोटि के संस्थानों के साथ-साथ संपूर्ण देश के अनेकों छोटे बड़े शहरों में इंजीनियरिंग कॉलेज व देशवासियों के स्वास्थ्य की देखभाल करने के लिये मेडिकल कॉलेज स्थापित किये गये। नेहरूजी ने वैज्ञानिक सोच को बड़ावा देने एवं युवाओं में विज्ञान के अध्ययन की रुची जाग्रत करने हेतु नेहरू ने भारतीय विज्ञान कांग्रेस की स्थापना की। भारत के विभिन्न भागों में स्थापित वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद के अनेक केंद्र इस क्षेत्र में उनकी दूरदर्शिता के स्पष्ट प्रतीक हैं। खेलों में नेहरू की व्यक्तिगत रुचि थी। एक देश का दूसरे देश से मधुर सम्बन्ध कायम करने के लिए 1951 में उन्होंने दिल्ली में प्रथम एशियाई खेलों का आयोजन करवाया।

देश में योजनाबद्ध विकास हेतु योजना आयोग की स्थापना की गई। दूसरे महायुद्ध के बाद विश्व दो गुटों में विभाजित हो गया था। भारत ने यह फैसला किया कि वह दोनों में से किसी गुट में शामिल नहीं होगा। हमारी गुटनिरपेक्षता की नीति के कारण सारी दुनिया में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी और जवाहरलाल नेहरू गुटनिरपेक्ष देशों के सर्वाधिक शक्तिशाली नेता बन गये। नेहरु जी मानते थे बिना शांति के, सभी सपने टूट जाते हैं और राख में मिल जाते हैं। नेहरू जी ने बतलाया की शायद जीवन में डर से बुरा और खतरनाक कुछ भी नहीं है। समाजवाद... ना केवल जीने का तरीका है, बल्कि सामजिक और आर्थिक समस्यों के निवारण के लिए एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। नेहरुजी ने अनेकों किताबे लिखी जिनमें डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया, एन ओटोबायोग्राफी ग्लिम्प्सेस ऑफ़ वर्ल्डहिस्ट्री, पुत्री के नाम पिता के पत्र प्रमुख है। चाचा नेहरू ने अपने तरोताजा रहने का राज बताते हुये कहा– इसके तीन कारण हैं। यथा--बच्चों को बहुत प्यार करता हूँ। उनके साथ खेलने की कोशिश करता हूँ, इससे मैं अपने आपको उनको जैसा ही महसूस करता हूँ। मैं प्रकृति प्रेमी हूँ और पेड़-पौधों, पक्षी, पहाड़, नदी, झरनों, चाँद, सितारों से बहुत प्यार करता हूँ।

नेहरूजी का प्रजातंत्र और लोकतंत्र में अटूट विश्वास था। अपने कार्यकाल में अनेको बार प्रमुख विरोधी नेताओं को लोक सभा में लाने का प्रयास किया। वे लोकसभा की कार्यवाही में रोज बिना नागा भाग लेते थे और अपनी आलोचना को सहज भाव से सुनते थे, अपने विरोधियों का सम्मान करते थे। संविधान का पूरी तरह से पालन करते थे और नियमित रूप से मुख्यमंत्रियों को पत्र लिखते थे उनकी समस्याओं को सुन कर उनका निवारण भी करते थे। आजादी के बाद जब उन्होंने अपना मंत्रीमंडल बनाया तो गैर कांग्रेसी बाबासाहिब अम्बेडकर को अपने विरोधी श्यामा प्रसाद मुखर्जी को मंत्री बनाकर सच्चे प्रजातंत्र की मिसाल पेश की। उनके मंत्रियों में अनेक विरोधी विचार धारा वाले भी थे। प्रजातंत्र की नीव को उन्होंने इतना मजबूत बना दिया था जिससे लोकतंत्र चट्टान से भी ज्यादा मजबूत बन गया है।। पिछले कुछ सालों से उनकी छवि को धूमिल किया जा रहा है और देशवासियों को भ्रमित करने का कुत्सित प्रचार योजना बद्द तरीकों से किया जा रहा है किन्तु सच्चाई तो यही है कि इतिहास और दुनिया नेहरूजी को आधुनिक भारत का शिल्पकार और लोकतंत्र प्रेमी के रूप में याद करेगी।

नेहरू ने ऐसा राजनीतिक-आर्थिक एवं सामाजिक आधार निर्मित किया जिससे भारत की एकता, अखण्डता व प्रजातंत्र इतना सशक्त हुआ कि आज कोई ताकत खत्म नहीं कर सकती। नेहरू ने भारत को पूरी ताकत लगाकर एक धर्मनिरपेक्ष देश बनाया। चूँकि हमने धर्मनिरपेक्षता को अपनाया इसलिए हमारे देश में प्रजातंत्र की जड़ें गहरी होती गई।

27 मई 1964 को जब उनके निधन का समाचार मिला तो कश्मीर से कन्याकुमारी तक के नर नारी स्तब्ध रह गये बाजार स्वत बंध हो गये उनकी शवयात्रा में लाखों नर नारी शामिल हो गए उनकी इच्छा के मुताबिक उनकी अस्थियों ,राख को देश के खेत खलियानों में विसर्जित किया गया। नेहरु जी के निधन पर भारतीय जनता पार्टी के संस्थापकों में प्रमुख अटल बिहारी बाजपेयी ने कहा था एक सपना खत्म हो गया है, एक गीत खामोश हो गया है, एक लौ हमेशा के लिए बुझ गई है। यह एक ऐसा सपना था, जिसमे भूखमरी, भय डर नहीं था, यह ऐसा गीत था जिसमे गीता की गूंज थी तो गुलाब की महक थी। यह चिराग की ऐसी लौ थी जो पूरी रात जलती थी, हर अंधेरे का इसने सामना किया, इसने हमे रास्ता दिखाया और एक सुबह निर्वाण की प्राप्ति कर ली। आज भारत माता दुखी हैं, उन्होंने अपने सबसे कीमती सपूत खो दिया। मानवता आज दुखी है, उसने अपना सेवक खो दिया। शांति बेचैन है, उसने अपना संरक्षक खो दिया। आम आदमी ने अपनी आंखों की रौशनी खो दी है, पर्दा नीचे गिर गया है।

नेहरु शांति के साधक थे तो साथ ही क्रांति के अग्रदूत भी थे। वह अहिंसा के भी साधक थे, लेकिन हथियारों की वकालत की और देश की आजादी और प्रतिष्ठा की रक्षा की। वह व्यक्तिगत स्वतंत्रता के समर्थक थे, साथ ही आर्थिक समानता के पक्षधर थे। वह किसी से भी समझौता करने से नहीं डरते थे, लेकिन उन्होंने किसी के भय से समझौता नहीं किया। जबरदस्त व्यक्तित्व, विपक्ष को भी साथ लेकर चलने की क्षमता, उनके व्यक्तित्व को फिर से परिभाषित करता है, ऐसी महानता शायद हम भविष्य में कभी नहीं देख पाएं। 14 नवम्बर 2022 को उनकी 123वीं जयंती के अवसर पर भारत के नवनिर्माण के महान शिल्पकार नेहरूजी को नमन करें।

डॉ. जे.के गर्ग
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा, जयपुर

प्रति घंटे की दर से नियुक्त हो रहे शिक्षक

राजस्थान सरकार नए अध्यापकों को नियुक्ति देने के बजाय गेस्ट फैकल्टी से चला रही काम

- **शिक्षक संगठन बेरोजगार युवकों को भर्ती करने का दबाव बना रहे हैं**

चाकसू, (निसं)। राजस्थान सरकार अपने कार्यकाल में मनचाही जगह बिना किसी पूर्व योजना के स्कूल, कॉलेज खोलती आ रही है। इनके लिए अभी तक भी भूमि, भवन, स्टाफ एवं संसाधन उपलब्ध नहीं हो सके हैं। आधा सत्र जा रहा है उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पास पर्याप्त शिक्षक तक नहीं हैं। विद्यार्थियों का भविष्य भगवान भरोसे चल रहा है। राजस्थान सरकार नवीन नियुक्तियां देने के स्थान पर रिक्त पदों पर गेस्ट फैकल्टी योजना के तहत एक निश्चित मानदेय पर प्रति घंटे के हिसाब से शिक्षक नियुक्ति का प्रयास कर बालकों के लिए अध्यापन की व्यवस्था कर रही है।

घोषित कार्यक्रम के अनुसार गुरुवार को रिक्त पदों पर स्कूलों को प्राप्त आवेदनों की जांच करने के बाद वरियता सूची चस्पा कर दी गई है। चयन का दायित्व उसी विद्यालय के प्रिंसिपल द्वारा तैयार चयन समिति को दिया गया है। इसमें पात्र शिक्षक बेरोजगार युवकों एवं सेवानिवृत्त शिक्षकों ने आवेदन किया है। हालांकि नवीन नियुक्तियां नहीं देने एवं मानदेय पर शिक्षक समायोजन का राजस्थान शिक्षक संघ राष्ट्रीय के अध्यक्ष रामावतार शर्मा, शिक्षक नेता महावीर प्रसाद गुप्ता, रामस्वरूप गुर्जर आदि प्रबल विरोध कर रहे हैं। सरकार पर बेरोजगार युवकों को भर्ती करने का दबाव बना रहे हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार बालिका सीनियर सेकेंडरी स्कूल चाकसू, शीतला माता, उच्च माध्यमिक विद्यालय बरखेड़ा, जानकी बल्लभ पुरा, काठावाला, खेड़ा लदाणा, मानपुरा, निमोडिया, चाकसू रेल्वे स्टेशन, रूपवास, सवाई माधोसिंह पुरा, स्वामी का बास, थूणी अभियान, महात्मा गांधी स्कूल शिवदासपुरा में अध्यापकों की पोस्ट रिक्त हैं। ब्लाक शिक्षा अधिकारी कार्यालय चाकसू से प्राप्त जानकारी के अनुसार चाकसू ब्लाक के संबंधित विद्यालयों के बाहर प्राप्त आवेदन पत्र जांच के साथ वरियता सूची चस्पा कर दी गई है। 11 नवंबर को मूल दस्तावेज की जांच, 12 को नियुक्ति आदेश जारी एवं 19 को कार्यभार ग्रहण करने की अंतिम तिथि है।

पिम्स हॉस्पिटल उमरड़ा को बैस्ट मैडिकल कॉलेज अवॉर्ड

पिम्स मेडिकल कॉलेज को सम्मानित करने के दौरान यूजी व पीजी के विद्यार्थी सहित 250 ईएनटी सर्जन शामिल हुए।

उदयपुर, (कासं)। उदयपुर में एक्सेंट इन ईएनटी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें उदयपुर संभाग, पाली व भीलवाड़ा के सभी मैडिकल कॉलेज में अध्ययनरत यूजी व पीजी के विद्यार्थी सहित 250 ईएनटी सर्जन शामिल हुए।

पेसिफिक इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल सांइसेज, उमरड़ा के ईएनटी पीजी स्टूडेन्ट डॉ. नबील सिंधी ने पोस्टर प्रस्तुति में प्रथम पुरस्कार, शोधपत्र वाचन में डॉ. सुदीप्ति सरल ने प्रथम पुरस्कार व पीजी क्विज में डॉ. नबील सिंधी तथा डॉ. सुदीप्ति सरल ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। इसी प्रकार यूजी स्टूडेन्ट जितेन्द्र चौधरी ने शोधपत्र वाचन में द्वितीय पुरस्कार एवं यूजी क्विज में हिमांशु तंवर, ऋतिका काला तथा रघुवीर उपाध्याय ने द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। इस दौरान पिम्स हॉस्पिटल उमरड़ा को बेस्ट मेडिकल कॉलेज की ट्राफी प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस उपलब्धि पर पिम्स के चेयरमैन आशीष अग्रवाल ने ईएनटी विभाग व समस्त छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

छात्राओं को मिलेंगे ई वॉलेट, दुकान से अपनी पसंद की साइकिल ले सकेंगी

- **3.50 लाख छात्राओं को पहली बार पसंद की साइकिल खरीदने का मौका**
- **शिक्षा विभाग से तैयार नहीं हो पा रहा टेंडर डॉक्यूमेंट**
- **ई. डब्लयु. एस वर्ग की छात्राओं को भी निःशुल्क साइकिल देने की घोषणा की**

बीकानेर, (कासं)। राज्य में पहली बार 9वीं कक्षा की छात्राओं को अपनी पसंद की साइकिल खरीदने का मौका सरकार ने दिया है, लेकिन शिक्षा विभाग से टेंडर डॉक्यूमेंट ही तैयार नहीं हो पा रहा। पहला टेंडर इसलिए रिजेक्ट हो गया क्योंकि उसमें शर्तें स्पष्ट नहीं थीं। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय की इस ढिलाई के कारण छात्राओं को सात महीने बाद भी साइकिलें नहीं मिल सकीं।

राज्य की स्कूलों में पढ़ने वाली 9वीं कक्षा की करीब 3.50 लाख छात्राओं को साइकिलों का निशुल्क वितरण किया जाना है। छात्राओं को छूट दी गई है कि वे अपनी पसंद की साइकिल ले सकेंगी। इसके लिए छात्राओं को ई वॉलेट दिया जाएगा, जिसे कंपनी के शो रूम पर देना होगा। कंपनी को पेमेंट बैंक से हो जाएगा। यदि किसी छात्रा को सरकार की ओर से तय दर से ऊंची दर वाली साइकिल पसंद है तो बढ़ी हुई रकम छात्रा को ही देनी होगी। सरकार की ओर से केवल निर्धारित दर का ही भुगतान होगा।

दरअसल कंपनियों ने टेंडर शर्तों को पूरी तरह स्पष्ट करने को कहा है। प्रति साइकिल की कीमत 3500-4000 रुपए अनुमानित होने पर साल का बजट करीब डेढ़ सौ करोड़ रुपए तक बैठता है। साइकिलों की सप्लाई सीधे ब्लॉक स्तर पर होगी। इसके लिए कंपनी को राज्य के 370 ब्लॉक मुख्यालयों पर अपने अस्थायी शो रूम खोलने होंगे।

कंपनी को साइकिल का भुगतान सीधे बैंक से होगा। इसमें शिक्षा निदेशालय का कोई हस्तक्षेप नहीं रहेगा। राज्य सरकार ने ई. डब्लयु.एस वर्ग की कक्षा 6 से 8 तक की छात्राओं को भी निशुल्क साइकिल देने की घोषणा की है। राज्यभर में इस वर्ग की 60 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाली 5800 छात्राओं को लाभांवित करने का लक्ष्य रखा गया है। शर्त ये है कि उनके माता-पिता की वार्षिक आय एक लाख से कम होनी चाहिए।

सरकार ने इस बार विभिन्न कंपनी और मॉडल की साइकिलें वितरण करने के आदेश दिए हैं। नए बदलाव को लेकर विभाग के अधिकारी कंपनी, मॉडल और रेट तय नहीं कर पा रहे। एक्सपर्ट के अनुसार विभाग को नई शर्तों के तहत सभी कंपनियों से प्रस्ताव मंगवाने चाहिए। छात्राओं से भी ऑफर लिया जाए कि उन्हें किस कंपनी और मॉडल की साइकिल चाहिए। उसके बाद रेट तय कर नए सिरे से टेंडर डॉक्यूमेंट तैयार किया जाए। निदेशक, माध्यमिक शिक्षा ने बताया कि साइकिल वितरण योजना के प्रावधानों में कुछ बदलाव किया गया है। जिसकी प्रक्रिया चल रही है। जल्द ही पात्र छात्राओं को लाभान्वित किया जाएगा।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शुक्रवार 11 नवम्बर, 2022

मार्गशीष मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2079, मृगशिरा नक्षत्र शनिवार प्रात: 7:33 तक, सिद्ध योग रात्रि 10:02 तक, वणिज करण प्रात: 7:25 तक, चन्द्रमा आज सांय 6:17 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-वृष, मंगल-मिथुन, बुध-तुला, गुरू-मीन, शुक्र-तुला, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से रात्रि 8:18 तक है। भद्रा प्रात: 7:25 से रात्रि 8:18 तक रहेगी। शुक्र वृश्चिक में रात्रि 8:09 पर प्रवेश करेगा। आज सौभाग्य सुन्दरी व्रत है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 8:08 तक, लाभ-अमृत 8:08 से 10:50 तक, शुभ 12:12 से 1:32 तक, चर 4:13 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 6:47, सूर्यास्त 5:34

मेष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है।

कन्या
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

तुला
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। व्यावसायिक अड़चनें अभी यथावत बनी रहेंगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

वृश्चिक
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

धनु
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को तनाव से राहत मिल सकती है। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कुंभ
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। शुभ कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। परिवार में मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आवश्यक कार्यों में परिचितों से सहयोग मिलेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।